NEXT IAS

दैनिक समसामयिकी विश्लेषण

समय: 45 मिनट

दिनाँक: 22-10-2024

विषय सूची

दक्षिण भारत की वृद्ध जनसंख्या

ग्रामीण युवा भारत के डिजिटल परिवर्तन में अग्रणी

उपग्रह/सैटेलाइट स्पेक्ट्रम का प्रशासनिक आवंटन

कृषि में जल की कमी पर रोम घोषणा

भारत में प्रकृति पुनर्स्थापन कानून की आवश्यकता

नए मूल्यांकन में राष्ट्रीय जैव विविधता रणनीतियों में आर्द्रभूमि की भूमिका पर प्रकाश डाला गया

संक्षिप्त समाचार

मिस्र: 2024 में 'मलेरिया मुक्त' घोषित होने वाला दूसरा देश

प्रधानमंत्री भारतीय जनऔषधि परियोजना (PMBJP)

भारत-सिंगापुर रक्षा मंत्रियों की छठी वार्ता

ICTP गैलाथिया बे

Z-डवती परियोजना

2024 आर्थिक स्वतंत्रता सूचकांक

SPADEX (अंतरिक्ष डॉकिंग प्रयोग)

कैनोरहैबडाइटिस एलिगेंस

अभ्यास नसीम-अल-बह्र

दक्षिण भारत की वृद्ध जनसंख्या

सन्दर्भ

- आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री ने दक्षिणी राज्यों में घटती प्रजनन दर की ओर संकेत किया, जो घटकर 1.6 हो गई है - जो राष्ट्रीय औसत 2.1 से काफी नीचे है।

दक्षिणी भारत की जनसंख्या में रुझान

- **घटती प्रजनन दर:** आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु और केरल जैसे दक्षिणी भारतीय राज्य पहले ही प्रतिस्थापन-स्तर प्रजनन दर (प्रति महिला 2.1 बच्चे) तक पहुँच चुके हैं या उसके करीब हैं। उदाहरण के लिए:
  - आंध्र प्रदेश ने 2004 में यह उपलब्धि प्राप्त की।
  - केरल 1988 में ही इस स्तर पर पहुंच गया था।
  - इन राज्यों में उत्तरी भारत की तुलना में प्रजनन दर काफी कम है, जिससे जनसंख्या वृद्धि धीमी हो रही है।

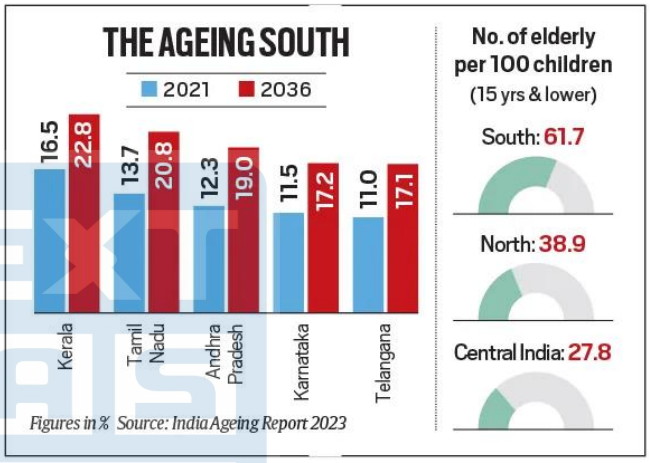

- **वृद्ध जनसंख्या:** कम प्रजनन दर और बढ़ती जीवन प्रत्याशा के साथ, दक्षिणी भारत में जनसंख्या तेजी से वृद्ध हो रही है:
  - केरल की 60+ जनसँख्या 2011 में 13% से बढ़कर 2036 तक 23% होने का अनुमान है।
  - आंध्र प्रदेश और तमिलनाडु में भी इसी तरह का जनसांख्यिकीय बदलाव देखने को मिल रहा है, जिससे बुजुर्ग निवासियों का अनुपात बढ़ रहा है।
- **जनसंख्या वृद्धि में योगदान:** अनुमान है कि 2011 से 2036 तक भारत की कुल जनसंख्या वृद्धि में दक्षिणी राज्यों का योगदान केवल 9% होगा। इसके विपरीत, उत्तर प्रदेश और बिहार जैसे उत्तरी राज्यों का भारत की भविष्य की जनसंख्या वृद्धि में बहुत बड़ा हिस्सा होगा।
- **आंतरिक प्रवास और कार्यबल:** घटती जन्म दर और घटती कामकाजी आयु वाली जनसख्या के कारण, दक्षिणी राज्य श्रम की कमी को पूरा करने तथा आर्थिक विकास को बनाए रखने के लिए उत्तरी भारत से आने वाले प्रवासियों पर अधिक निर्भर हो रहे हैं।
- **राजनीतिक प्रतिनिधित्व पर प्रभाव:** दक्षिणी भारत में धीमी जनसंख्या वृद्धि राजनीतिक प्रतिनिधित्व के बारे में चिंताएँ उत्पन्न करती है। निर्वाचन क्षेत्रों के परिसीमन के बाद, दक्षिणी राज्य कुछ संसदीय सीटें खो सकते हैं, जबकि उत्तर प्रदेश और बिहार जैसे अधिक जनसँख्या वाले उत्तरी राज्यों को प्रतिनिधित्व मिल सकता है।
- **आर्थिक और स्वास्थ्य सेवा तनाव:** दक्षिणी राज्यों में बढ़ती वृद्ध जनसख्या से स्वास्थ्य सेवा व्यय में वृद्धि और सामाजिक सुरक्षा प्रणालियों पर और अधिक माँग बढ़ने की उम्मीद है।

POPULATION BY PERCENTAGE IN DIFFERENT AGE BRACKETS

INDIA	2011	2036 (PROJECTED)
0-14 years	30.9	20.1
15-59 years	60.7	64.9
60+ years	8.4	14.9

Andhra Pradesh	2011	2036
0-14 years	25.2	15.7
15-59 years	64.8	65.3
60+ years	10.1	19

Uttar Pradesh	2011	2036
0-14 years	36	22
15-59 years	56.7	66.1
60+ years	7.3	11.9

Source: Population Projection by Ministry of Health and Family Welfare

जनसंख्या में गिरावट से जुड़ी चुनौतियाँ

- **आर्थिक प्रभाव:** वृद्ध जनसँख्या का उच्च प्रतिशत यह दर्शाता है कि राज्य को इस बढ़ती जनसँख्या की देखभाल पर अधिक खर्च करना पड़ सकता है।
  - पेंशन प्रणाली और सामाजिक सुरक्षा पर दबाव बढ़ रहा है।
- **देखभाल की आवश्यकता:** वृद्ध जनसँख्या में वृद्धि के साथ, देखभाल करने वालों की आवश्यकता बढ़ रही है।
  - परिवारों को कार्य और व्यक्तिगत जीवन के साथ देखभाल की ज़िम्मेदारियों को संतुलित करने में संघर्ष करना पड़ सकता है।
- **सामाजिक अलगाव:** वृद्ध वयस्कों को प्रायः सामाजिक अलगाव का सामना करना पड़ता है, विशेषकर शहरी क्षेत्रों में जहाँ पारंपरिक पारिवारिक संरचनाएँ परिवर्तित हो रही हैं।
- **महिलाओं पर प्रभाव:** वृद्धावस्था में गरीबी स्वाभाविक रूप से लिंग आधारित होती है, जब वृद्ध महिलाओं के विधवा होने, अकेले रहने, बिना आय के और अपनी स्वयं की कम संपत्ति होने तथा समर्थन के लिए पूरी तरह से परिवार पर निर्भर होने की संभावना अधिक होती है।
- **नीति विकास:** वृद्ध वयस्कों की ज़रूरतों को संबोधित करने वाली व्यापक नीतियों की आवश्यकता है, जिसमें स्वास्थ्य सेवा, आवास और सामाजिक कल्याण शामिल हैं।
- **उत्तर-दक्षिण विभाजन**: उत्तर प्रदेश जैसे उत्तरी राज्य, जो भारत की जनसँख्या में अधिक योगदान करते हैं, संसाधन वितरण को प्रभावित करते हुए राजनीतिक और आर्थिक फोकस बढ़ा सकते हैं।

आगे की राह

- **आंतरिक प्रवास को बढ़ावा देना:** दक्षिणी राज्य उत्तरी भारत से श्रमिकों को लाकर कार्यबल की कमी को कम कर सकते हैं, जहाँ कामकाजी आयु वर्ग की जनसँख्या अधिक है। यह दक्षिण में घटती युवा जनसँख्या द्वारा बनाए गए अंतर को समाप्त करने में सहायता कर सकता है।

- **कार्यबल विकास:** स्वचालन, उन्नत प्रौद्योगिकी और कौशल पुनः प्रशिक्षण कार्यक्रमों में निवेश सिकुड़ते श्रम बल को कुशलतापूर्वक प्रबंधित करने की कुंजी होगी। यह दृष्टिकोण कम युवा श्रमिकों के प्रभाव को कम करते हुए उत्पादकता को बनाए रख सकता है।
- **परिवारों को प्रोत्साहित करें:** स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा और रोजगार के अवसरों पर ध्यान केंद्रित करें - उच्च जन्म दर को प्रोत्साहित करने में अधिक प्रभावी हो सकता है।
- **संतुलित विकास:** क्षेत्रीय असमानताओं को कम करने के लिए, उत्तरी और दक्षिणी दोनों राज्यों में आर्थिक तथा सामाजिक विकास पर समान बल देना महत्वपूर्ण है। यह स्थायी आंतरिक प्रवास सुनिश्चित कर सकता है और क्षेत्रों में सामाजिक-आर्थिक असंतुलन को कम कर सकता है।

Source: IE

ग्रामीण युवा भारत के डिजिटल परिवर्तन में अग्रणी

समाचार में

- ग्रामीण युवाओं को भारत की आकांक्षाओं के पीछे प्रेरक शक्ति के रूप में देखा जाता है, विशेषकर डिजिटल परिवर्तन के दौरान।

परिचय

- ग्रामीण भारत एक उल्लेखनीय परिवर्तन से गुजर रहा है क्योंकि अधिक युवा लोग प्रौद्योगिकी को अपना रहे हैं और डिजिटल दुनिया से जुड़ रहे हैं।
- मोबाइल प्रौद्योगिकी को अपनाने की प्रवृत्ति बढ़ रही है, ग्रामीण युवाओं की बढ़ती संख्या डिजिटल उपकरणों को अपने दैनिक जीवन में एकीकृत कर रही है।

आंकड़ों का विश्लेषण

- **मोबाइल उपयोग:** उच्च स्वीकृति: 95.7% ग्रामीण युवा (15-24 वर्ष की आयु) मोबाइल फोन का उपयोग करते हैं; 99.5% के पास 4G कवरेज है।
- **इंटरनेट एक्सेस:** 82.1% ग्रामीण युवा इंटरनेट का उपयोग कर सकते हैं, जिसमें तेज़ी से वृद्धि देखी गई है।
    - सर्वेक्षण से पहले तीन महीनों में 80.4% ग्रामीण युवाओं ने इंटरनेट का उपयोग किया।
    - इंटरनेट का उपयोग बढ़ रहा है, जो शहरी क्षेत्रों के साथ अंतर को कम कर रहा है, जो 91.0% है।

डिजिटलीकरण का प्रभाव

- **डिजिटल क्षमता में वृद्धि:** 74.9% ग्रामीण युवा बुनियादी संदेश भेज सकते हैं।
    - डेटा प्रबंधन (कॉपी करना, पेस्ट करना) में कौशल बढ़ रहे हैं, 67.1% इन कार्यों में सक्षम हैं।
    - 60.4% सक्रिय रूप से ऑनलाइन जानकारी खोजते हैं।
- डिजिटल विस्तार ग्रामीण युवाओं को प्रौद्योगिकी अपनाने, संचार, शिक्षा और वित्तीय गतिविधियों में सुधार करने में सहायता कर रहा है।

- डिजिटलीकरण की ओर बदलाव दक्षता बढ़ा रहा है और व्यक्तियों को सशक्त बना रहा है, विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में।

डिजिटल कौशल में चुनौतियाँ

- ईमेल भेजने का कौशल सीमित है (43.6% लोग ईमेल भेज सकते हैं)।
- ऑनलाइन बैंकिंग क्षमताएं कम हैं, 31% लोग लेनदेन करने में सक्षम हैं।

सरकारी पहल:

- **डिजिटल इंडिया पहल:** विभिन्न योजनाओं (जैसे, TIDE 2.0, GENESIS) के माध्यम से प्रौद्योगिकी और नवाचार को बढ़ावा देना।
- **भारतनेट परियोजना:** इसका उद्देश्य ब्रॉडबैंड पहुँच के लिए ग्रामीण क्षेत्रों को ऑप्टिकल फाइबर से जोड़ना है।
- **सार्वजनिक वाई-फाई पहल:** PM-WANI पूरे भारत में सार्वजनिक वाई-फाई हॉटस्पॉट प्रदान करता है।

भविष्य का दृष्टिकोण:

- भारत में ग्रामीण डिजिटल विस्तार युवाओं को प्रौद्योगिकी अपनाने में सक्षम बना रहा है, जिससे रोजमर्रा की जिंदगी में महत्वपूर्ण परिवर्तन आ रहे हैं और शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के बीच का अंतर कम हो रही है।
- डिजिटल साक्षरता और बुनियादी ढांचे में निरंतर सुधार ग्रामीण युवाओं को अधिक जुड़े और समावेशी भारत में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने में सक्षम बनाएगा।

Source :PIB

उपग्रह/सैटेलाइट स्पेक्ट्रम का प्रशासनिक आवंटन

सन्दर्भ

- केंद्रीय संचार मंत्री ने पुष्टि की कि उपग्रह संचार के लिए स्पेक्ट्रम का आवंटन वायुतरंगों की नीलामी के बजाय प्रशासनिक रूप से किया जाएगा।

सैटेलाइट स्पेक्ट्रम क्या है?

- सैटेलाइट स्पेक्ट्रम से तात्पर्य सैटेलाइट संचार के लिए उपयोग की जाने वाली रेडियो आवृत्तियों से है।
  - ये आवृत्तियाँ सैटेलाइट-आधारित प्रणालियों को कक्षा में उपस्थित सैटेलाइट और ग्राउंड स्टेशनों के बीच डेटा और सिग्नल संचारित करने में सक्षम बनाती हैं।
- स्थलीय स्पेक्ट्रम के विपरीत, सैटेलाइट स्पेक्ट्रम राष्ट्रीय क्षेत्रीय सीमाओं के बिना संचालित होता है और अंतर्राष्ट्रीय दूरसंचार संघ (ITU) द्वारा वैश्विक स्तर पर प्रबंधित किया जाता है।
- सैटेलाइट स्पेक्ट्रम को अलग-अलग आवृत्ति बैंड में विभाजित किया जाता है, जिनमें से प्रत्येक विशिष्ट प्रकार के संचार के लिए उपयुक्त होता है;

- **L-बैंड (1-2 गीगाहर्ट्ज):** मोबाइल सैटेलाइट सेवाओं, GPS और समुद्री संचार के लिए उपयोग किया जाता है।
- **S-बैंड (2-4 गीगाहर्ट्ज):** मोबाइल सैटेलाइट संचार, मौसम उपग्रहों और कुछ सैटेलाइट टीवी के लिए उपयोग किया जाता है।
- **C-बैंड (4-8 गीगाहर्ट्ज):** मुख्य रूप से सैटेलाइट टीवी प्रसारण और लंबी दूरी के संचार के लिए उपयोग किया जाता है।
- **X-बैंड (8-12 गीगाहर्ट्ज):** सैन्य संचार और रडार अनुप्रयोगों के लिए उपयोग किया जाता है।
- **Ku-बैंड (12-18 गीगाहर्ट्ज):** सैटेलाइट टीवी, ब्रॉडबैंड इंटरनेट और फिक्स्ड सैटेलाइट सेवाओं के लिए सामान्य है।
- **Ka-बैंड (26-40 गीगाहर्ट्ज):** उच्च गति वाले उपग्रह इंटरनेट, सैन्य संचार और उच्च-रिज़ॉल्यूशन उपग्रह इमेजरी के लिए उपयोग किया जाता है।

भारत में उपग्रह संचार (सैटकॉम) की संभावना

- भारत का सैटकॉम सेक्टर वर्तमान में 2.3 बिलियन डॉलर प्रति वर्ष है और 2028 तक 20 बिलियन डॉलर तक पहुँच जाएगा।
- वैश्विक स्तर पर इस क्षेत्र में निवेश के मामले में भारत चौथे स्थान पर है।
- भारत में लगभग 290.4 मिलियन घरों में ब्रॉडबैंड की सुविधा नहीं है, जो सैटेलाइट ऑपरेटरों के लिए एक मजबूत बाजार अवसर प्रस्तुत करता है।

उपग्रह संचार के लाभ

- सैटकॉम सेवाएँ ज़मीन पर कनेक्टिविटी प्रदान करने के लिए कक्षा में उपग्रहों की एक सरणी का उपयोग करती हैं। उन्हें डेटा संचारित करने के लिए तारों की आवश्यकता नहीं होती है, और वे ज़मीन-आधारित संचार का एक विकल्प हैं, जिन्हें स्थलीय नेटवर्क कहा जाता है, जैसे केबल, फाइबर या डिजिटल सब्सक्राइबर लाइन (DSL)।
- **व्यापक कवरेज:** सैटकॉम उन दूरदराज और ग्रामीण क्षेत्रों तक पहुँच सकता है जो स्थलीय नेटवर्क के लिए दुर्गम हैं।
- **लचीला नेटवर्क:** सैटेलाइट-आधारित इंटरनेट सामान्यतः ज़मीन पर कम घटकों के कारण स्थलीय सेवाओं की तुलना में अधिक लचीला होता है। यह इसे चरम मौसम की घटनाओं से होने वाली हानि के प्रति कम संवेदनशील बनाता है, जिससे संकट के दौरान अधिक विश्वसनीय सेवा सुनिश्चित होती है।
- **कम बुनियादी ढाँचे की आवश्यकताएँ:** स्थलीय नेटवर्क के विपरीत, जिसके लिए व्यापक भौतिक बुनियादी ढाँचे (जैसे केबल और टावर) की आवश्यकता होती है, सैटकॉम न्यूनतम उपकरण स्थापना के साथ विशाल क्षेत्रों को कवर कर सकता है।

भारत में स्पेक्ट्रम आवंटन

- सैटकॉम के लिए स्पेक्ट्रम दूरसंचार अधिनियम, 2023 की पहली अनुसूची ("प्रशासनिक प्रक्रिया के माध्यम से स्पेक्ट्रम का आवंटन") का भाग है।

- अधिनियम की धारा 4(4) के तहत, दूरसंचार स्पेक्ट्रम को नीलामी के माध्यम से आवंटित किया जाएगा "पहली अनुसूची में सूचीबद्ध प्रविष्टियों को छोड़कर, जिसके लिए आवंटन प्रशासनिक प्रक्रिया द्वारा किया जाएगा"।
- अधिनियम के तहत प्रशासनिक प्रक्रिया का अर्थ है नीलामी आयोजित किए बिना स्पेक्ट्रम का आवंटन (स्पेक्ट्रम के आवंटन के लिए बोली प्रक्रिया)।

प्रशासनिक आवंटन का उद्देश्य

- स्थलीय मोबाइल सेवाओं के लिए, स्पेक्ट्रम अनन्य है, और किसी दिए गए भौगोलिक क्षेत्र में केवल एक ही मोबाइल ऑपरेटर द्वारा प्रबंधित किया जाता है; इसलिए, इसे ऑपरेटरों के बीच या उनके बीच साझा नहीं किया जा सकता है।
- उपग्रहों के मामले में, वही स्पेक्ट्रम प्रकृति में गैर-अनन्य है, और एक ही भौगोलिक क्षेत्र की सेवा के लिए कई उपग्रह ऑपरेटरों द्वारा इसका उपयोग किया जा सकता है।
    - इसलिए, सामान्य प्रवृत्ति प्रशासनिक रूप से उपग्रह स्पेक्ट्रम आवंटित करने की है।
- अमेरिका, ब्राजील और सऊदी अरब जैसे देशों ने पहले ऑर्बिटल स्लॉट सहित उपग्रह स्पेक्ट्रम के लिए नीलामी आयोजित की थी। हालाँकि, नीलामी को अव्यावहारिक पाते हुए अमेरिका और ब्राजील दोनों ने प्रशासनिक असाइनमेंट पर वापस लौट आए।

अंतर्राष्ट्रीय दूरसंचार संघ (ITU)

- यह सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (ICT) के लिए संयुक्त राष्ट्र की विशेष एजेंसी है।
- संचार नेटवर्क में अंतर्राष्ट्रीय संपर्क को सुविधाजनक बनाने के लिए 1865 में स्थापित।
    - भारत 1869 से ITU का सदस्य रहा है।
- **कार्य:** यह वैश्विक रेडियो स्पेक्ट्रम और उपग्रह कक्षाओं का आवंटन करता है।
- यह तकनीकी मानकों को विकसित करता है जो नेटवर्क और प्रौद्योगिकियों को निर्बाध रूप से आपस में जोड़ना सुनिश्चित करते हैं, और विश्व भर में वंचित समुदायों तक ICT की पहुँच में सुधार करने का प्रयास करते हैं।

Source: IE

कृषि में जल की कमी पर रोम घोषणा

सन्दर्भ

- खाद्य एवं कृषि संगठन (FAO) तथा कृषि में जल की कमी पर वैश्विक फ्रेमवर्क (WASAG) ने कृषि में जल की कमी पर रोम घोषणा को अपनाया।

परिचय

- यह घोषणा पत्र FAO के वार्षिक विश्व खाद्य मंच (WASAG) के दौरान आयोजित उच्च स्तरीय रोम जल वार्ता के अवसर पर जारी किया गया।

- घोषणा पत्र का उद्देश्य जलवायु संकट के कारण बढ़ती जल कमी को दूर करना था।
- WASAG पहल को वर्ष 2016 में माराकेश में संयुक्त राष्ट्र जलवायु सम्मेलन में शुरू किया गया था, ताकि जल कमी की चुनौतियों से निपटने में देशों की सहायता की जा सके।

खाद्य एवं कृषि संगठन (FAO)

- FAO संयुक्त राष्ट्र की एक विशेष एजेंसी है जो भुखमरी को समाप्त करने और खाद्य सुरक्षा में सुधार के लिए अंतर्राष्ट्रीय प्रयासों का नेतृत्व करती है।
- इसकी स्थापना 16 अक्टूबर 1945 को हुई थी।
- **सदस्य:** FAO में 195 सदस्य शामिल हैं, जिनमें 194 देश और यूरोपीय संघ शामिल हैं।
- **मुख्यालय:** रोम, इटली।

विश्व खाद्य मंच (WFF)

- WFF को 2021 में खाद्य एवं कृषि संगठन की युवा समिति द्वारा भागीदारों के एक स्वतंत्र नेटवर्क के रूप में लॉन्च किया गया था।
- यह बेहतर खाद्य भविष्य के लिए कृषि खाद्य प्रणालियों को सक्रिय रूप से आकार देने के लिए प्रमुख वैश्विक मंच के रूप में कार्य करता है, जिससे सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) की उपलब्धि में तेजी आती है।
- **मुख्य आकर्षण:** ग्लोबल फैमिली फार्मिंग फोरम को FAO और इंटरनेशनल फंड फॉर एग्रीकल्चरल डेवलपमेंट (IFAD) द्वारा लॉन्च किया गया था।
- **2024 WFF का विषय:** 'आज और कल के लिए, सभी के लिए अच्छा भोजन'।

पारिवारिक खेती/फैमिली फार्मिंग क्या है?

- पारिवारिक खेती से तात्पर्य उन कृषि गतिविधियों से है जिनका प्रबंधन और संचालन परिवारों द्वारा किया जाता है, तथा जो मुख्य रूप से पारिवारिक श्रम पर निर्भर होती हैं।
- इसमें फसल, वानिकी, मत्स्य पालन और पशुपालन सहित सभी परिवार-आधारित कृषि गतिविधियाँ शामिल हैं।

पारिवारिक खेती का महत्व

- विश्व भर में 550 मिलियन से अधिक खेतों के साथ पारिवारिक खेती खाद्य उत्पादन की रीढ़ है, जो सभी खेतों का 90 प्रतिशत से अधिक है।
  - मूल्य के संदर्भ में यह विश्व के 70 से 80 प्रतिशत खाद्य उत्पादन करता है।
- पारिवारिक किसान, विशेष रूप से निम्न और मध्यम आय वाले देशों में, विविध, पौष्टिक भोजन उगाते हैं, फसल जैव विविधता का समर्थन करते हैं और प्राकृतिक संसाधनों का जिम्मेदारी से प्रबंधन करते हैं।
- संयुक्त राष्ट्र परिवार खेती का दशक (UNDFF) 2019-2028 20 दिसंबर, 2017 को संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा सर्वसम्मति से अपनाया गया था और 104 देशों द्वारा इसका समर्थन किया गया था।

पारिवारिक खेती के समक्ष चुनौतियाँ

- **जलवायु परिवर्तन:** यह जलवायु परिवर्तन के प्रभावों के प्रति संवेदनशील है, जैसे सूखा, बाढ़ और अप्रत्याशित मौसम पैटर्न, जो फसल की पैदावार और खाद्य उत्पादन को प्रभावित करते हैं।
- **संसाधनों तक पहुँच:** छोटे पारिवारिक खेतों को भूमि, पानी, वित्तीय सेवाओं, प्रौद्योगिकी और बाजारों तक सीमित पहुँच का सामना करना पड़ता है, जिससे उत्पादकता और आय बढ़ाने की उनकी क्षमता बाधित होती है।
- **नीति और संस्थागत समर्थन:** कई क्षेत्रों में, पारिवारिक किसानों को सब्सिडी, बुनियादी ढाँचे और अनुकूल नीतियों के मामले में अपर्याप्त सरकारी समर्थन मिलता है जो उन्हें बड़े बाजारों में प्रतिस्पर्धा करने में सहायता कर सकता है।

आगे की राह

- जलवायु-अनुकूल कृषि पद्धतियों को बढ़ावा देना परिवार के किसानों को बदलती पर्यावरणीय परिस्थितियों के अनुकूल ढलने में सहायता करने के लिए आवश्यक है।
- शिक्षा, कौशल विकास और वित्तीय प्रोत्साहन के माध्यम से युवा पीढ़ी को खेती में शामिल करने से परिवार की खेती की निरंतरता सुनिश्चित करने में सहायता मिलेगी।

Source: DTE

भारत में प्रकृति पुनर्स्थापन कानून की आवश्यकता

सन्दर्भ

- भारत को अपने बढ़ते पर्यावरणीय संकटों और भूमि क्षरण से निपटने के लिए यूरोपीय संघ (EU) प्रकृति पुनर्स्थापना कानून से प्रेरित होकर एक व्यापक प्रकृति पुनर्स्थापना कानून की आवश्यकता है।

प्रकृति पुनर्स्थापन कानून

- इस कानून का लक्ष्य 2050 तक खराब स्थिति में पड़े 80% यूरोपीय आवासों की मरम्मत करना है।
- प्रत्येक सदस्य राज्य के लिए कानूनी रूप से बाध्यकारी लक्ष्य होंगे।
- इसका उद्देश्य 2030 तक यूरोपीय संघ के कम से कम 20% भूमि और समुद्री क्षेत्रों को प्रकृति पुनर्स्थापन उपायों के साथ कवर करना है, और अंततः 2050 तक पुनर्स्थापना की आवश्यकता वाले सभी पारिस्थितिकी तंत्रों तक इनका विस्तार करना है।

भारत में पुनर्स्थापन कानून की आवश्यकता

- **भूमि क्षरण:** भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO) के मरुस्थलीकरण और भूमि क्षरण एटलस के अनुसार, 2018-19 में भारत के कुल भौगोलिक क्षेत्र का लगभग 97.85 मिलियन हेक्टेयर (29.7%) भूमि क्षरण से गुजरा।
- **वैश्विक प्रतिबद्धताएँ:** भारत ने बॉन चैलेंज और संयुक्त राष्ट्र के भूमि क्षरण तटस्थता लक्ष्यों के हिस्से के रूप में 2030 तक 26 मिलियन हेक्टेयर क्षरित भूमि को पुनर्स्थापन करने की प्रतिबद्धता व्यक्त की है।

- **जलवायु परिवर्तन की भेद्यता:** क्षरित भूमि जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को बढ़ाती है, जिससे क्षेत्र सूखे, बाढ़ और अन्य जलवायु संबंधी आपदाओं के प्रति अधिक संवेदनशील हो जाते हैं।

पुनर्स्थापना के लाभ

- विश्व आर्थिक मंच के अनुसार, प्रकृति की पुनर्स्थापना से वैश्विक स्तर पर 2030 तक वार्षिक 10 ट्रिलियन डॉलर तक का आर्थिक लाभ हो सकता है।
    - भारत में, बंजर भूमि को पुनर्स्थापना करने से कृषि उत्पादकता बढ़ेगी, जल सुरक्षा में सुधार होगा और लाखों रोजगार सृजित होंगी, विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में।
- **SDG लक्ष्य 15:** यह कानून भारत को अपने सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) लक्ष्य 15 को पूरा करने में भी सहायता कर सकता है, जिसमें वनों के सतत प्रबंधन और मरुस्थलीकरण से निपटने का आह्वान किया गया है।
- **जलवायु लचीलापन:** पारिस्थितिकी तंत्र को पुनर्स्थापित करने से जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को भी कम किया जा सकता है, जो भूमि क्षरण को बढ़ाता है। बंजर भूमि कार्बन डाइऑक्साइड को अवशोषित करने की अपनी क्षमता खो देती है, जिससे ग्लोबल वार्मिंग में और वृद्धि होती है।
- **अंतर्राष्ट्रीय समझौते:** अपने पारिस्थितिकी तंत्र को पुनर्स्थापित करके, भारत अपने कार्बन सिंक को बढ़ा सकता है और पेरिस समझौते के तहत अपनी प्रतिबद्धताओं को पूरा कर सकता है।

भारत द्वारा की गई पहल

- **ग्रीन इंडिया मिशन:** इसका उद्देश्य 5 मिलियन हेक्टेयर तक वन एवं वृक्ष आवरण को बढ़ाना और अन्य 5 मिलियन हेक्टेयर में वन आवरण की गुणवत्ता में सुधार करना है।
- **प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना:** इसका उद्देश्य सिंचाई कवरेज में सुधार करना और कृषि में जल उपयोग दक्षता को बढ़ाना है।
    - यह वर्षा जल संचयन, वाटरशेड प्रबंधन और सूक्ष्म सिंचाई जैसे उपायों के माध्यम से "प्रति बूंद अधिक फसल" पर ध्यान केंद्रित करता है
- **एकीकृत वाटरशेड प्रबंधन कार्यक्रम:** यह विश्व का दूसरा सबसे बड़ा वाटरशेड कार्यक्रम है। यह मिट्टी, वनस्पति और पानी जैसे खराब हो चुके प्राकृतिक संसाधनों का दोहन, संरक्षण और विकास करके पारिस्थितिक संतुलन को पुनर्स्थापित करने का प्रयास करता है।
- **राष्ट्रीय वनरोपण कार्यक्रम:** यह खराब हो चुके वनों और गैर-वन भूमि के वनरोपण, पुनर्वनीकरण और पारिस्थितिकी-पुनर्स्थापना का समर्थन करता है।

आगे की राह

- **पुनर्स्थापना के लक्ष्य:** भारत को 2030 तक अपनी क्षरित भूमि के 20% हिस्से को पुनर्स्थापित करने का लक्ष्य रखना चाहिए, तथा 2050 तक सभी पारिस्थितिकी तंत्रों को पुनर्स्थापित करने का लक्ष्य रखना चाहिए। इसमें वन, आर्द्रभूमि, नदियाँ, कृषि भूमि और शहरी हरित क्षेत्र शामिल हैं।

- **आर्द्रभूमि पुनर्स्थापना:** सुंदरबन और चिल्का झील जैसी महत्वपूर्ण आर्द्रभूमि जैव विविधता और कार्बन पृथक्करण का समर्थन करती हैं। एक कानून 2030 तक क्षरित आर्द्रभूमि के 30% हिस्से को पुनर्स्थापित करने का लक्ष्य रख सकता है।
- **कृषि में जैव विविधता:** कृषि वानिकी और संधारणीय प्रथाओं को बढ़ावा देने से कृषि भूमि को पुनर्स्थापित किया जा सकता है। यूरोपीय संघ में उपयोग किए जाने वाले तितली या पक्षी सूचकांक जैसे संकेतक प्रगति को ट्रैक कर सकते हैं।
- **शहरी हरित क्षेत्र:** भारत को हरित क्षेत्रों का शुद्ध हानि न हो, यह सुनिश्चित करना चाहिए, तथा बेंगलुरु और दिल्ली जैसे शहरों में शहरी वनों को बढ़ावा देना चाहिए, जो गर्मी के द्वीपों एवं घटती वायु गुणवत्ता का सामना कर रहे हैं।

निष्कर्ष

- दुनिया भर के देशों के लिए यूरोपीय संघ का प्रकृति पुनरुद्धार कानून एक महत्वपूर्ण उदाहरण प्रस्तुत करता है।
- भारत में भूमि क्षरण और जैव विविधता के हानि के खतरनाक स्तर को देखते हुए, ऐसा कानून न केवल भारत को अपने बिगड़े हुए पारिस्थितिकी तंत्र को पुनर्स्थापित करने में सहायता करेगा, बल्कि इसके सामाजिक-आर्थिक विकास और जलवायु लचीलेपन में भी योगदान देगा।

Source: TH

नए मूल्यांकन में राष्ट्रीय जैव विविधता रणनीतियों में आर्द्रभूमि की भूमिका पर प्रकाश डाला गया

सन्दर्भ

- वेटलैंड्स इंटरनेशनल द्वारा नियुक्त एक संगठन द्वारा हाल ही में किए गए मूल्यांकन में, COP15 के बाद प्रस्तुत राष्ट्रीय जैव विविधता रणनीतियों और कार्य योजनाओं (NBSAP) में वेटलैंड्स के महत्वपूर्ण महत्व पर प्रकाश डाला गया।

परिचय

- यह इस बात की जानकारी देता है कि विश्व भर में NBSAPs में आर्द्रभूमि को कितनी प्रभावी रूप से शामिल किया गया है।
- इसका उद्देश्य वैश्विक जैव विविधता योजना के सफल कार्यान्वयन में आर्द्रभूमि संरक्षण और पुनर्स्थापना की महत्वपूर्ण भूमिका को उजागर करना है।

प्रमुख निष्कर्ष

- मूल्यांकन में विश्व भर के 24 NBSAPs शामिल हैं, जो जैव विविधता पर कन्वेंशन के पक्षकार 196 देशों में से 12 प्रतिशत का प्रतिनिधित्व करते हैं।
- प्रस्तुत किए गए 83 प्रतिशत NBSAPs में स्पष्ट रूप से अपने लक्ष्यों में आर्द्रभूमि, अंतर्देशीय जल या मीठे पानी का उल्लेख किया गया है।

- 71 प्रतिशत योजनाओं में पुनर्स्थापना के लिए विशिष्ट उपाय (लक्ष्य 2) और 50 प्रतिशत में इन महत्वपूर्ण पारिस्थितिकी प्रणालियों (लक्ष्य 3) के लिए सुरक्षा शामिल है।
- कम NBSAPs विशिष्ट, मापनीय लक्ष्य प्रदान करते हैं, जो उन क्षेत्रों में सुधार की आवश्यकता को दर्शाता है।
- 16 NBSAPs में मैंग्रोव, नदियों, झीलों और पीटलैंड सहित विशिष्ट आर्द्रभूमि प्रकारों का उल्लेख किया गया है।
- इनमें से, मैंग्रोव, नदियों और झीलों का सबसे अधिक उल्लेख किया गया, जो विभिन्न पर्यावरणीय लक्ष्यों में उनके महत्व को दर्शाता है।
- **सिफारिश:** रिपोर्ट में देशों द्वारा राष्ट्रीय जैव विविधता लक्ष्यों के अंदर आर्द्रभूमि के एकीकरण को बढ़ाने, आर्द्रभूमि पुनर्स्थापना और संरक्षण के लिए स्पष्ट, मापनीय लक्ष्य स्थापित करने की आवश्यकता पर बल दिया गया।

COP 16

- जैविक विविधता पर कन्वेंशन के पक्षकारों के सम्मेलन (CBD COP 16) की सोलहवीं बैठक 21 अक्टूबर से 1 नवंबर 2024 तक कैली, कोलंबिया में आयोजित की जाएगी।
- यह 2022 में COP 15 में कुनमिंग-मॉन्ट्रियल वैश्विक जैव विविधता ढांचे को अपनाने के बाद से पहला जैव विविधता COP होगा।
- COP 16 में, सरकारों को कुनमिंग-मॉन्ट्रियल वैश्विक जैव विविधता ढांचे के कार्यान्वयन की स्थिति की समीक्षा करने का काम सौंपा जाएगा।
- कन्वेंशन के पक्षों से अपेक्षा की जाती है कि वे अपनी राष्ट्रीय जैव विविधता रणनीतियों और कार्य योजनाओं (NBSAPs) को फ्रेमवर्क के साथ संरेखित करें।

कुनमिंग-मॉन्ट्रियल वैश्विक जैव विविधता ढांचा(GBF)

- GBF को 2022 में जैविक विविधता पर कन्वेंशन के लिए COP15 द्वारा अपनाया गया था।
- इसे "प्रकृति के लिए पेरिस समझौते" के रूप में प्रचारित किया गया है।
- GBF में 4 वैश्विक लक्ष्य और 23 लक्ष्य शामिल हैं।
    - 2030 तक प्राप्त किए जाने वाले तेईस लक्ष्यों में आक्रामक प्रजातियों के प्रवेश को आधा करना और हानिकारक सब्सिडी में $500 बिलियन/वर्ष की कमी शामिल है।
    - "लक्ष्य 3" को विशेष रूप से "30X30" लक्ष्य के रूप में संदर्भित किया जाता है।
- **'30X30' लक्ष्य**
    - इसके तहत, प्रतिनिधियों ने 2030 तक 30% भूमि और 30% तटीय और समुद्री क्षेत्रों की रक्षा करने की प्रतिबद्धता व्यक्त की, जो कि डील के सबसे उच्च-प्रोफ़ाइल लक्ष्य को पूरा करता है, जिसे 30-बाय-30 के रूप में जाना जाता है।
    - डील में दशक भर में 30% क्षरित भूमि और जल को पुनर्स्थापित करने की भी इच्छा है, जो कि पहले के लक्ष्य 20% से अधिक है।
    - साथ ही, विश्व बहुत सी प्रजातियों वाले बरकरार परिदृश्यों और क्षेत्रों को नष्ट होने से बचाने का

प्रयास करेगी, जिससे उन हानि को "2030 तक शून्य के करीब" लाया जा सके।

आद्रभूमि क्या है?

- वेटलैंड एक पारिस्थितिकी तंत्र है जिसमें भूमि पानी से ढकी होती है - नमकीन, ताजा या कहीं बीच में - या तो मौसमी या स्थायी रूप से। यह अपने स्वयं के विशिष्ट पारिस्थितिकी तंत्र के रूप में कार्य करता है।
- इसमें झीलें, नदियाँ, भूमिगत जलभृत, दलदल, गीले घास के मैदान, पीटलैंड, डेल्टा, ज्वारीय मैदान, मैंग्रोव, प्रवाल भित्तियाँ और अन्य तटीय क्षेत्र जैसे जल निकाय शामिल हैं।
- इन वेटलैंड्स को तीन खंडों में वर्गीकृत किया जा सकता है जैसे अंतर्देशीय वेटलैंड्स, तटीय वेटलैंड्स और मानव निर्मित वेटलैंड्स।

भारत में आर्द्रभूमियाँ

- भारत में हिमालय की उच्च ऊंचाई वाली आर्द्रभूमि, गंगा और ब्रह्मपुत्र जैसी नदियों के बाढ़ के मैदान, तटरेखा पर लैगून और मैंग्रोव दलदल और समुद्री वातावरण में चट्टानें शामिल हैं।
- भारत में लगभग 4.6% भूमि आर्द्रभूमि है, भारत की 85 आर्द्रभूमियाँ अंतर्राष्ट्रीय महत्व की आर्द्रभूमियों की सूची में शामिल हैं।
- वर्तमान में, भारत निर्दिष्ट स्थलों की संख्या के मामले में दक्षिण एशिया में पहले और एशिया में तीसरे स्थान पर है।

आर्द्रभूमि का महत्व

- **जैव विविधता हॉटस्पॉट:** आर्द्रभूमि पृथ्वी पर सबसे अधिक जैविक रूप से विविध पारिस्थितिकी तंत्रों में से एक है, जो विभिन्न प्रकार के पौधों और जानवरों की प्रजातियों का समर्थन करती है।
- **जल निस्पंदन और शुद्धिकरण:** आर्द्रभूमि प्राकृतिक फिल्टर के रूप में कार्य करती है, जो पानी से प्रदूषकों और तलछट को फँसाती और हटाती है।
- **बाढ़ नियंत्रण और जल विनियमन:** आर्द्रभूमि भारी वर्षा या तूफान की घटनाओं के दौरान अतिरिक्त पानी को अवशोषित करके और धीमा करके बाढ़ के खिलाफ प्राकृतिक बफर के रूप में कार्य करती है।
- **कार्बन सीक्वेस्ट्रेशन:** आर्द्रभूमि में जलभराव की स्थिति कार्बनिक पदार्थों के अपघटन को धीमा कर देती है, जिससे मिट्टी में कार्बन का संचय होता है।
- **आर्थिक लाभ:** आर्द्रभूमि मत्स्य पालन, कृषि और पर्यटन सहित विभिन्न आर्थिक गतिविधियों का समर्थन करती है। वे स्थानीय समुदायों के लिए मूल्यवान संसाधन प्रदान करते हैं और समग्र अर्थव्यवस्था में योगदान करते हैं।

आर्द्रभूमियों के लिए खतरे

- **शहरीकरण:** शहरी केंद्रों के पास की आर्द्रभूमि आवासीय, औद्योगिक और वाणिज्यिक सुविधाओं के लिए विकास के दबाव में है।

- **कृषि गतिविधियाँ:** 1970 के दशक की हरित क्रांति के बाद, आर्द्रभूमि के विशाल हिस्से धान के खेतों में बदल गए हैं।
- **वनों की कटाई:** जलग्रहण क्षेत्र में वनस्पति को हटाने से मिट्टी का कटाव और गाद जम जाती है।
- **प्रदूषण:** उद्योगों से निकलने वाले सीवेज और जहरीले रसायनों के अनियंत्रित डंपिंग ने कई मीठे पानी की आर्द्रभूमि को प्रदूषित कर दिया है।
- **जलीय कृषि:** झींगा और मछलियों की मांग ने आर्द्रभूमि और मैंग्रोव वनों को मछली पालन और जलीय कृषि तालाबों के विकास के लिए आर्थिक प्रोत्साहन प्रदान किया है।
- **प्रचलित प्रजातियाँ:** भारतीय आर्द्रभूमि जलकुंभी और साल्विनिया जैसी विदेशी पौधों की प्रजातियों से खतरे में हैं।
- **जलवायु परिवर्तन:** हवा के तापमान में वृद्धि; वर्षा में बदलाव; तूफानों, बाढ़ की बढ़ती आवृत्ति; और समुद्र के स्तर में वृद्धि भी आर्द्रभूमि को प्रभावित करती है।
- **सूखा:** लंबे समय तक सूखे की अवधि के कारण आर्द्रभूमि में जल स्तर कम हो जाता है, जिससे उनके पारिस्थितिक कार्य और उन पर निर्भर प्रजातियाँ प्रभावित होती हैं।

निष्कर्ष

- आर्द्रभूमियों का संरक्षण और उचित प्रबंधन, पारिस्थितिक कार्यों को बनाए रखने तथा पर्यावरण तथा समाज दोनों को उनके द्वारा प्रदान की जाने वाली सेवाओं की निरन्तर उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए महत्वपूर्ण है।

Source: DTE

संक्षिप्त समाचार

मिस्र: 2024 में 'मलेरिया मुक्त' घोषित होने वाला दूसरा देश

समाचार में

- विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) ने मिस्र को मलेरिया मुक्त प्रमाणित किया है।

क्या आप जानते हैं ?

- प्रमाणन तब दिया जाता है जब कोई देश यह सिद्ध कर सकता है कि देश भर में स्वदेशी मलेरिया संचरण कम से कम लगातार तीन वर्षों तक बाधित रहा है और उसके पास फिर से मलेरिया के प्रसार को रोकने की क्षमता है।
- मिस्र, काबो वर्डे के बाद, 2024 में यह दर्जा प्राप्त करने वाला दूसरा देश और अफ्रीका में पाँचवाँ देश है।

ऐतिहासिक संदर्भ

- मिस्र में मलेरिया का इतिहास 4000 ईसा पूर्व से ही दर्ज है, जिसका ऐतिहासिक आनुवंशिक प्रमाण ममियों में पाया गया है।

- मच्छरों के प्रजनन के लिए अनुकूल परिस्थितियों के कारण यह बीमारी विशेष रूप से नील नदी के समुदायों में केंद्रित थी।

मलेरिया

- मलेरिया एक जानलेवा बीमारी है, जो प्लास्मोडियम परजीवी के कारण होती है और संक्रमित मादा एनोफिलीज मच्छरों के काटने से फैलती है।
- यह उप-सहारा अफ्रीका, दक्षिण-पूर्व एशिया और दक्षिण अमेरिका सहित उष्णकटिबंधीय तथा उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में सबसे अधिक प्रचलित है।
- सबसे घातक प्रजाति प्लास्मोडियम फाल्सीपेरम है, लेकिन प्लास्मोडियम विवैक्स सबसे व्यापक है।
- मानव शरीर में प्रवेश करने के बाद, परजीवी यकृत में गुणा करता है और फिर लाल रक्त कोशिकाओं को संक्रमित करता है
- **लक्षण:** बुखार, सिरदर्द, ठंड लगना, थकान, भ्रम, दौरे, सांस लेने में कठिनाई, पीलिया एवं गहरे रंग का मूत्र।
- रोकथाम की रणनीतियाँ:
  - **वेक्टर नियंत्रण:** मुख्य रणनीतियों में कीटनाशक-उपचारित जाल (ITN) और इनडोर अवशिष्ट छिड़काव (IRS) शामिल हैं, हालाँकि कीटनाशकों के प्रति प्रतिरोध उभर रहा है।
  - **R21/मैट्रिक्स-एम वैक्सीन:** अक्टूबर 2023 में अनुशंसित, रोकथाम के प्रयासों को और बढ़ाता है।
  - **क्लोरोक्वीन:** संवेदनशील क्षेत्रों में पी. विवैक्स के लिए प्रभावी, पुनरावृत्ति को रोकने के लिए प्रायः प्राइमाक्वीन के साथ पूरक किया जाता है।

वैश्विक और भारतीय प्रयास

- **वैश्विक मलेरिया कार्यक्रम:** 2030 तक मलेरिया की घटनाओं और मृत्यु दर को 90% तक कम करने की रणनीति के साथ WHO द्वारा शुरू किया गया।
- **ई-2025 पहल:** 2025 तक 25 देशों में मलेरिया संचरण को रोकने का लक्ष्य।
- **भारत का राष्ट्रीय वेक्टर-जनित रोग नियंत्रण कार्यक्रम (NVBDCP):** एकीकृत उपायों के माध्यम से मलेरिया सहित कई वेक्टर-जनित रोगों पर ध्यान केंद्रित करता है।

Source :DTE

प्रधानमंत्री भारतीय जनऔषधि परियोजना(PMBJP)

समाचार में

- प्रधानमंत्री भारतीय जनऔषधि परियोजना एक हजार करोड़ रुपये की बिक्री प्राप्त करके एक उल्लेखनीय उपलब्धि तक पहुंच गई है।

PMBJP के बारे में

- इसे 2008 में भारत सरकार के रसायन एवं उर्वरक मंत्रालय के फार्मास्यूटिकल्स विभाग द्वारा लॉन्च किया गया था।
- इसका उद्देश्य सभी को, विशेष रूप से वंचितों को, सस्ती कीमतों पर गुणवत्तापूर्ण जेनेरिक दवाइयाँ उपलब्ध कराना है।
- इस योजना का क्रियान्वयन फार्मा एंड मेडिकल ब्यूरो ऑफ इंडिया (PMBI) द्वारा किया जाता है, जो एक पंजीकृत सोसायटी है।
- **क्रियान्वयन:**
  - इन दवाओं को उपलब्ध कराने के लिए जन औषधि केंद्र के रूप में जाने जाने वाले समर्पित आउटलेट स्थापित किए गए हैं।
  - ये जेनेरिक दवाइयाँ बहुत कम कीमत पर उपलब्ध कराते हैं।
  - इन दवाओं की क्षमता खुले बाजार में उपलब्ध महंगी ब्रांडेड दवाओं के समान ही है।
  - 30 जून, 2024 तक, पूरे भारत में 12,616 जन औषधि केंद्र कार्यरत हैं।

क्या आप जानते हैं ?

- जेनेरिक दवाइयों को मालिकाना या ब्रांड नाम के बजाय गैर-मालिकाना या स्वीकृत नाम से बेचा जाता है। जेनेरिक दवाइयाँ अपने ब्रांडेड समकक्षों की तुलना में उतनी ही प्रभावी और सस्ती होती हैं।

Source :Air

भारत-सिंगापुर रक्षा मंत्रियों की छठी वार्ता

समाचार में

- छठे भारत-सिंगापुर रक्षा मंत्रियों की वार्ता की सह-अध्यक्षता भारत के रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह और सिंगापुर के रक्षा मंत्री डॉ. एनजी इंग हेन करेंगे।

वार्ता के बारे में

- भारत और सिंगापुर के बीच व्यापक रणनीतिक साझेदारी है।
- सिंगापुर भारत की एक्ट ईस्ट नीति का एक प्रमुख स्तंभ है और इंडो-पैसिफिक विजन का एक महत्वपूर्ण साझेदार है।
- दोनों देशों के बीच रक्षा और सुरक्षा साझेदारी इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में स्थिरता का एक महत्वपूर्ण कारक है।
- बैठक का उद्देश्य दोनों देशों के बीच रक्षा सहयोग को आगे बढ़ाना है और वे साझा हितों के क्षेत्रीय तथा वैश्विक मुद्दों पर विचारों का आदान-प्रदान भी करेंगे।

Source : PIB

ICTP गैलाथिया बे

सन्दर्भ

- गैलेथिया खाड़ी में मेगा अंतर्राष्ट्रीय कंटेनर ट्रांसशिपमेंट पोर्ट (ICTP) को 13वें प्रमुख बंदरगाह के रूप में अधिसूचित किया गया है।

परिचय

- यह बंगाल की खाड़ी में ग्रेट निकोबार द्वीप में स्थित है।
- ग्रेट निकोबार द्वीप अंडमान और निकोबार द्वीप समूह के केंद्र शासित प्रदेश का एक हिस्सा है, जो मलक्का जलडमरूमध्य से 40 समुद्री मील की दूरी पर है।
    - मलक्का जलडमरूमध्य अंतरराष्ट्रीय शिपिंग चैनल है जो वार्षिक वैश्विक समुद्री व्यापार के लगभग 35 प्रतिशत की पूर्ति करता है।
- यह बंदरगाह सिंगापुर, क्लैंग और कोलंबो जैसे ट्रांसशिपमेंट टर्मिनलों के निकट पूर्व-पश्चिम अंतरराष्ट्रीय व्यापार तथा शिपिंग मार्ग पर रणनीतिक रूप से स्थित होगा।
- यह तेजी से विकसित हो रहे इंडो-पैसिफिक भू-राजनीतिक क्षेत्र का भी हिस्सा है। .
- इस क्षेत्र के प्रवेश द्वार के रूप में, यह भारतीय पूर्वी तट के बंदरगाहों के साथ-साथ बांग्लादेश और म्यांमार से ट्रांसशिपमेंट कार्गो को भी प्राप्त करेगा।

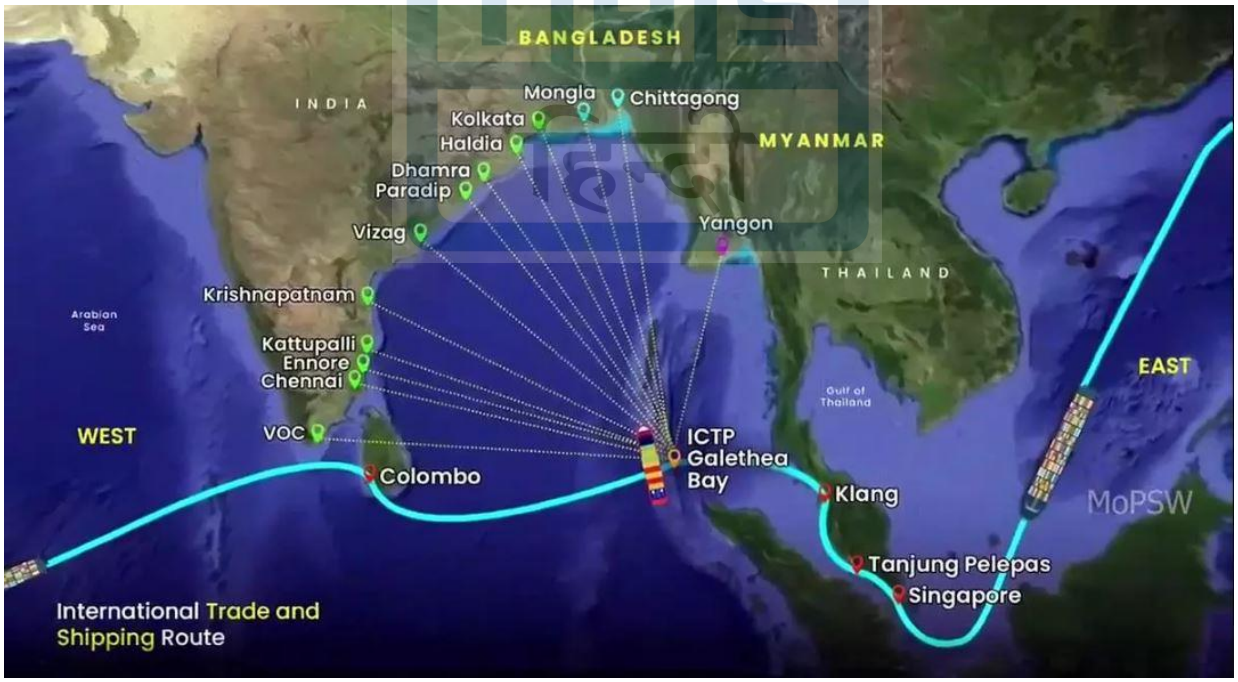

- **महत्व:** वर्तमान में भारत का लगभग 75 प्रतिशत ट्रांसशिप्ड कार्गो विदेशी बंदरगाहों पर संचालित होता है।
    - गैलेथिया खाड़ी में ICTP भारतीय बंदरगाहों को ट्रांसशिपमेंट शुल्क में प्रत्येक वर्ष 200-220 मिलियन डॉलर की बचत कर सकता है।

Source: BL

Z-Morh परियोजना

समाचार में

- पाकिस्तान समर्थित लश्कर-ए-तैयबा ने जम्मू-कश्मीर में Z-Morh परियोजना स्थल पर हाल ही में हुए आतंकवादी हमले की जिम्मेदारी ली है।

Z-Morh परियोजना के बारे में

- Z-Morh सुरंग 6.5 किलोमीटर लंबी सुरंग है जो सोनमर्ग स्वास्थ्य रिसॉर्ट को मध्य कश्मीर के गंदेरबल जिले के कंगन शहर से जोड़ती है।
- "Z-Morh" नाम निर्माण स्थल के पास Z-आकार के सड़क खंड को संदर्भित करता है।
- सुरंग श्रीनगर-लेह राजमार्ग पर एक प्रसिद्ध पर्यटन स्थल सोनमर्ग को सभी मौसम में कनेक्टिविटी प्रदान करेगी।
- बिलियन डॉलर की सुरंग परियोजना ज़ोजिला सुरंग परियोजना की सफलता के लिए भी महत्वपूर्ण है, जो लगभग 12,000 फीट की ऊँचाई पर स्थित है।

Source: TH

2024 आर्थिक स्वतंत्रता सूचकांक

समाचार में

- फ्रेजर इंस्टीट्यूट ने 2024 विश्व की आर्थिक स्वतंत्रता रिपोर्ट जारी की है, जो 165 क्षेत्राधिकारों में आर्थिक स्वतंत्रता का आकलन करती है।

परिचय

- रिपोर्ट में वर्ष 2022 के लिए हांगकांग, सिंगापुर और स्विटजरलैंड को आर्थिक स्वतंत्रता के उच्चतम स्तर वाले शीर्ष तीन क्षेत्रों के रूप में स्थान दिया गया है।
- भारत का स्थान 84वाँ है। यह 42 चरों पर आधारित है, जिसमें सरकार का आकार, संपत्ति के अधिकार, मौद्रिक नीति और व्यापार स्वतंत्रता जैसे क्षेत्र शामिल हैं।
- रिपोर्ट में पिछले तीन वर्षों में आर्थिक स्वतंत्रता में वैश्विक गिरावट पर प्रकाश डाला गया है।
- उच्च आर्थिक स्वतंत्रता वाले देश काफी बेहतर आर्थिक परिणाम दिखाते हैं।
    - उदाहरण के लिए, उनकी प्रति व्यक्ति GDP औसतन कम आर्थिक स्वतंत्रता वाले देशों की तुलना में 7.6 गुना अधिक है। इन देशों में अन्य लाभों में लंबी जीवन प्रत्याशा, कम गरीबी दर और उच्च खुशी के स्तर शामिल हैं।

Source: TH

SPADEX (अंतरिक्ष डॉकिंग प्रयोग)

समाचार में

- हैदराबाद स्थित एक निजी संस्था ने ISRO को उसके आगामी अंतरिक्ष डॉकिंग प्रयोग के लिए 400 किलोग्राम के दो उपग्रह सौंपे हैं।

SPADEX (अंतरिक्ष डॉकिंग प्रयोग)

- SPADEX का लक्ष्य दो अंतरिक्ष यान, एक 'चेज़र' और एक 'टारगेट' को कक्षा में स्वायत्त रूप से डॉक करने में सक्षम बनाना है, जो सटीकता, नेविगेशन और नियंत्रण का प्रदर्शन करता है - अंतरिक्ष स्टेशनों को एकत्रित करने, ईंधन भरने और अंतरिक्ष यात्रियों और कार्गो को अंतरिक्ष में स्थानांतरित करने के लिए महत्वपूर्ण कौशल।
- डॉकिंग सिस्टम का विकास शीत युद्ध के समय से होता आ रहा है, जब सोवियत संघ ने 1967 में अंतरिक्ष में पहली सफल डॉकिंग हासिल की थी, उसके बाद 1975 में USA की अपोलो-सोयुज टेस्ट परियोजना ने ऐसा किया था।
- तब से, डॉकिंग तकनीक में काफी विकास हुआ है, जो आधुनिक अंतरिक्ष मिशनों के लिए अधिक स्वचालित और अभिन्न अंग बन गई है, जैसा कि रूस के सोयुज अंतरिक्ष यान, नासा के क्रू ड्रैगन एवं चीन के तियानझोउ कार्गो अंतरिक्ष यान में देखा गया है।

महत्व

- यह मिशन भारत की भविष्य की अंतरिक्ष अन्वेषण योजनाओं के लिए महत्वपूर्ण है, जिसमें मानव अंतरिक्ष उड़ान, उपग्रह सेवा और बड़ी अंतरिक्ष संरचनाओं का निर्माण शामिल है।
- यह प्रयोग चंद्रयान-3 और आदित्य-एल1 जैसी इसरो की हालिया सफलताओं के बाद भारत की महत्वाकांक्षी अंतरिक्ष अन्वेषण दृष्टि की दिशा में एक कदम है।

Source: BS

कैनोरहैबडाइटिस एलिगेंस

सन्दर्भ

- कैनोरहेबडाइटिस एलिगेंस पर किए गए एक अध्ययन में पाया गया कि कोशिकाओं द्वारा अपने आसपास के पोषक तत्वों के प्रति प्रतिक्रिया करने के तरीके को नियंत्रित करने वाले जीन में छोटे-छोटे परिवर्तन के कारण कृमियों का जीवनकाल दोगुना हो गया।

सी. एलिगेंस के बारे में

- सी. एलिगेंस एक नेमाटोड (गोल कृमि) है - नेमाटोडा संघ का एक सदस्य।
- यह एक गैर-खतरनाक, गैर-संक्रामक, गैर-रोगजनक, गैर-परजीवी जीव है।
- यह मिट्टी के पारिस्थितिकी तंत्र में एक भूमिका निभाता है, बैक्टीरिया पर फ़ीड करता है और पोषक चक्रण में योगदान देता है।

- इसका व्यापक रूप से बुढ़ापे, न्यूरोडीजेनेरेटिव रोगों और विभिन्न आनुवंशिक उत्परिवर्तनों के प्रभावों के अध्ययन में उपयोग किया जाता है।
    - शोधकर्ता आसानी से इसके आनुवंशिकी में परिवर्तन कर सकते हैं और विकास एवं व्यवहार पर प्रभावों का निरीक्षण कर सकते हैं।

Source: IE

अभ्यास नसीम-अल-बह्र

सन्दर्भ

- भारतीय नौसेना और ओमान की रॉयल नेवी ने हाल ही में गोवा तट पर द्विपक्षीय नौसैनिक अभ्यास 'नसीम-अल-बह्र का समापन किया।

परिचय

- 1993 में शुरू किया गया यह अभ्यास दो चरणों में आयोजित किया गया: बंदरगाह चरण और समुद्री चरण।
- यह अभ्यास हिंद महासागर क्षेत्र में समान विचारधारा वाले देशों के साथ रचनात्मक सहयोग और आपसी विकास के लिए भारत की प्रतिबद्धता की पुष्टि करता है।

क्या आप जानते हैं?

- ओमान भारत की पश्चिम एशिया नीति का एक महत्वपूर्ण स्तंभ है और इसका सबसे पुराना क्षेत्रीय रणनीतिक साझेदार है।
- साथ ही, ओमान पहला खाड़ी देश है जिसके साथ भारत की तीनों रक्षा शाखाएँ संयुक्त अभ्यास करती हैं।
    - ईस्टर्न ब्रिज अभ्यास दोनों देशों की वायु सेनाओं के बीच आयोजित किया जाता है, जबकि अल-नजाह अभ्यास दोनों देशों की सेना के बीच आयोजित किया जाता है।

Source: PIB

■■■■